11

एकात्म मानववाद और सहभागी शासनः पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का विश्लेषण

*सपना कुमारी शर्मा**

यह शोध पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के दार्शनिक ढाँचे और उसके व्यावहारिक रूप सहभागी शासन का विश्लेषण करता है। एकात्म मानववाद भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित एक समग्र विकास मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति को शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित रूप में देखा जाता है। यह दर्शन नैतिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक चेतना और समाज के अन्तिम व्यक्ति—अंत्योदय—के कल्याण को शासन का वास्तविक उद्देश्य मानता है। शोध पत्र यह दर्शाता है कि उपाध्याय जी का दृष्टिकोण पूँजीवाद और साम्यवाद जैसी पारम्परिक राजनीतिक विचारधाराओं से परे जाकर एक ऐसा वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है, जो भारतीयता, विकेन्द्रीकरण और जनसहभागिता को शासन की आत्मा मानता है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार की योजनाओं—जैसे प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन और डिजिट इण्डिया—में उपाध्याय जी के विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है। ये योजनाएँ समावेशिता, स्थानीय भागीदारी और नैतिक शासन के सिद्धान्तों को साकार करती हैं। अंततः यह शोध पत्र तर्क प्रस्तुत करता है कि एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत दृष्टिकोण है, जो आधुनिक भारत में सहभागी, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शासन की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

[**प्रमुख शब्द :** अंत्योदय, एकात्म मानववाद, विकेन्द्रीकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सहभागी शासन।]

* **सहायक प्राध्यापक, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश)**

1. प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्थान अत्यन्त विशिष्ट और मौलिक है। उन्होंने ऐसे समय में एकात्म मानववाद की अवधारणा प्रस्तुत की जब भारत राजनीतिक रूप से पश्चिमी विचारधाराओं—पूँजीवाद और साम्यवाद—के प्रभाव में था। उपाध्याय जी ने इन दोनों विचारधाराओं की सीमाओं को उजागर करते हुए भारतीय संस्कृति, परम्परा और आध्यात्मिकता पर आधारित एक वैकल्पिक दर्शन का प्रतिपादन किया (Sau, 2024)। उनका मानना था कि भारत जैसे सांस्कृतिक राष्ट्र के लिए शासन का उद्देश्य केवल प्रशासन नहीं, बल्कि जनकल्याण और सामाजिक समरसता होना चाहिए (Meena & Dhayal, 2025)।

1965 में भारतीय जनसंघ के अधिवेशन में उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद को औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य केवल शरीर नहीं है, बल्कि वह शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप है (Upadhyaya, 1965)। यह समग्र दृष्टिकोण व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। उनके अनुसार, शासन की नीतियाँ ऐसी होनी चाहिए जो मानव के चारों आयामों—भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—को पोषित करें।

उपाध्याय जी ने पश्चिमी विचारधाराओं की आलोचना करते हुए कहा कि पूँजीवाद व्यक्ति को केवल उपभोक्ता मानता है, जबकि साम्यवाद उसे उत्पादन का साधन। इन दोनों में मानव की आत्मिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की उपेक्षा होती है (Singh, 2025)। इसके विपरीत, *एकात्म मानववाद* व्यक्ति को एक समग्र इकाई मानता है, जिसमें भौतिक समृद्धि के साथ-साथ नैतिकता और आध्यात्मिकता का समावेश आवश्यक है।

इस दर्शन का एक प्रमुख पहलू हैं—*अंत्योदय* अर्थात समाज के अन्तिम व्यक्ति तक विकास की पहुँच। उपाध्याय जी ने कहा, *''जब तक समाज का अन्तिम व्यक्ति सुखी नहीं होता, तब तक कोई भी शासन प्रणाली सफल नहीं मानी जा सकती''* (Upadhyaya, 1965)। यह विचार शासन को जनोन्मुखी और समावेशी बनाने की दिशा में प्रेरित करता है। अंत्योदय की भावना शासन को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा और समरसता का साधन बनाती है।

आज के समय में जब शासन तन्त्र तकनीकी, वैश्विक और आर्थिक दबावों से प्रभावित हो रहा है, उपाध्याय जी का दर्शन *भारतीयता* की पुनर्परिभाषा करता है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने शासन में *सबका साथ, सबका विकास* और *अंत्योदय* जैसे नारों के माध्यम से उपाध्याय जी के विचारों को आत्मसात किया है (Sharma, 2025)। योजनाओं जैसे *प्रधानमन्त्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन* और *जन धन योजना* में अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच और जनभागीदारी की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इस प्रकार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक जीवन दृष्टि है। यह दर्शन शासन को नैतिक, सांस्कृतिक और समावेशी बनाता है, जो भारतीय लोकतन्त्र को उसकी जड़ों से जोड़ता है। यह प्रस्तावना इस शोध

पत्र की आधारशिला है, जिसमें हम उपाध्याय जी के विचारों के आलोक में *सहभागी शासन* की अवधारणा का विश्लेषण करेंगे।

2. सहभागी शासन की अवधारणा

सहभागी शासन का तात्पर्य है कि शासन की प्रक्रिया में प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो। यह अवधारणा लोकतन्त्र को केवल चुनावी प्रक्रिया तक सीमित नहीं रखती, बल्कि शासन के प्रत्येक स्तर पर जनसहभागिता को आवश्यक मानती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, *लोकतन्त्र तभी सार्थक होता है जब उसमें जनता की सहभागिता केवल मत देने तक सीमित न रहकर नीति निर्माण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन तक विस्तृत हो* (Das, 2025)। उन्होंने शासन को एक सेवा के रूप में देखा, न कि सत्ता प्राप्ति के साधन के रूप में।

सहभागी शासन में नागरिकों को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि सहभागी माना जाता है। यह दृष्टिकोण शासन को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और जनोन्मुखी बनाता है। उपाध्याय जी ने कहा था, 'शासन का उद्देश्य जनसेवा है, न कि सत्ता प्राप्ति' (Upadhyaya, 1965)। यह विचार लोकतन्त्र की आत्मा को पुनर्परिभाषित करता है।

2·1 उपाध्याय जी का दृष्टिकोण

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शासन दर्शन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और धर्म की अवधारणा पर आधारित था। उन्होंने शासन को केवल प्रशासनिक तन्त्र नहीं, बल्कि *नैतिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व* का वाहक माना। उनके अनुसार, शासन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह *समाज के अन्तिम व्यक्ति तक कैसे पहुँचता है और उसकी आवश्यकताओं को कैसे सम्बोधित करता है* (NextIAS, 2025)।

(i) ग्राम स्वराज और विकेन्द्रीकरण

उपाध्याय जी ने *ग्राम स्वराज* की अवधारणा को पुनर्जीवित किया, जो महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित थी। उन्होंने कहा कि शासन की प्रक्रिया नीचे से ऊपर की होनी चाहिए, जिसमें *स्थानीय स्वशासन* को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने विकेन्द्रीकरण को शासन की आत्मा माना, जिससे *स्थानीय समस्याओं का स्थानीय समाधान* सम्भव हो सके (InsightsIAS, 2025)।

(ii) जनसहभागिता और उत्तरदायित्व

उनका मानना था कि शासन में *जनसहभागिता* केवल औपचारिक नहीं, बल्कि वास्तविक होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जनता को शासन की प्रक्रिया में *सक्रिय भूमिका* निभानी चाहिए—चाहे वह योजना निर्माण हो, बजट निर्धारण हो या निगरानी। यह दृष्टिकोण *सामाजिक उत्तरदायित्व* और *नैतिक चेतना* को बढ़ावा देता है।

(iii) शासन का उद्देश्यः सेवा, समरसता और स्वदेशी दृष्टिकोण

उपाध्याय जी ने शासन को सेवा का माध्यम माना। उन्होंने कहा कि शासन को *समरसता* और *स्वदेशी दृष्टिकोण* को अपनाना चाहिए, जिससे वह समाज की विविधता को सम्मान दे सके और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य कर सके (Das, 2025)।

2·2 शासन में नैतिकता और संस्कृति

सहभागी शासन केवल प्रशासनिक ढाँचे तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें नैतिकता, संस्कृति और *सामाजिक समरसता* का समावेश आवश्यक है। उपाध्याय जी ने कहा कि शासन को धर्म के मार्गदर्शन में कार्य करना चाहिए। यहाँ धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं, बल्कि *कर्तव्य, नैतिकता* और *सामाजिक उत्तरदायित्व* से है (Das, 2025)।

(i) नैतिक शासन की आवश्यकता

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यदि शासन केवल भौतिक विकास पर केन्द्रित हो और नैतिकता की उपेक्षा करे, तो वह *असंवेदनशील* और *अस्थायी* हो जाता है। शासन को *नैतिक मूल्यों* पर आधारित होना चाहिए, जिससे वह *विश्वास, पारदर्शिता* और *उत्तरदायित्व* को सुनिश्चित कर सके।

(ii) सांस्कृतिक चेतना का समावेश

उपाध्याय जी ने शासन में *सांस्कृतिक चेतना* को आवश्यक माना। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में शासन को *सांस्कृतिक विविधता* का सम्मान करना चाहिए और भारतीयता को पोषित करना चाहिए। यह दृष्टिकोण शासन को *सामाजिक समरसता* और *सांस्कृतिक पुनरुत्थान* की दिशा में प्रेरित करता है (NextIAS, 2025)।

(iii) समकालीन उदाहरण

आज के शासनतन्त्र में उपाध्याय जी के विचारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। *प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना, स्वच्छ भारत मिशन, उज्ज्वला योजना* और *जन धन योजना* जैसी योजनाएँ अंत्योदय और जनसहभागिता की भावना को साकार करती हैं। इन योजनाओं में *स्थानीय भागीदारी, सामाजिक समरसता* और *नैतिक उत्तरदायित्व* का समावेश उपाध्याय जी के दर्शन के अनुरूप है (InsightsIAS, 2025)।

3. एकात्म मानववाद और सहभागी शासन का अन्तर्सम्बन्ध

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित *एकात्म मानववाद* और *सहभागी शासन* की अवधारणाएँ परस्पर पूरक हैं। एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच सन्तुलन स्थापित करने की बात करता है, जबकि सहभागी शासन उस सन्तुलन को व्यवहार में लाने का माध्यम बनता है। दोनों ही विचारधाराएँ शासन को केवल प्रशासनिक तन्त्र नहीं, बल्कि *जनसेवा, नैतिकता* और *सांस्कृतिक चेतना* का वाहक मानती हैं (Meena & Dhayal, 2025)। इस खण्ड में हम इन दोनों अवधारणाओं के अन्तर्सम्बन्ध को तीन प्रमुख आयामों में समझने का प्रयास करेंगे।

3·1 समावेशिता

एकात्म मानववाद का मूल उद्देश्य है व्यक्ति का *समग्र विकास*—शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक। यह दर्शन मानता है कि जब तक समाज के अन्तिम व्यक्ति तक विकास की पहुँच नहीं होती, तब तक कोई भी शासन प्रणाली सफल नहीं मानी जा सकती

(Upadhyaya, 1965)। यही विचार *अंत्योदय* की भावना को जन्म देता है, जो शासन को *समावेशी* और *जनोन्मुखी* बनाता है।

सहभागी शासन इस समावेशिता को व्यवहार में लाने का माध्यम है। इसमें नागरिक केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि *नीति निर्माण और क्रियान्वयन* में सक्रिय भागीदार होते हैं। यह दृष्टिकोण शासन को *उत्तरदायी* और *पारदर्शी* बनाता है, जिससे समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं को सम्बोधित किया जा सके (Das, 2025)। उपाध्याय जी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि शासन का उद्देश्य *जनसेवा है, न कि सत्ता प्राप्ति।*

आज के शासन तन्त्र में योजनाएँ जैसे *जन धन योजना, उज्ज्वला योजना* और *प्रधानमन्त्री आवास योजना* इस समावेशिता को साकार करती हैं। इन योजनाओं में *अन्तिम व्यक्ति* तक पहुँच और *स्थानीय भागीदारी* को प्राथमिकता दी गई है, जो उपाध्याय जी के दर्शन के अनुरूप है (InsightsIAS, 2025)।

3·2 विकेन्द्रीकरण

एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज के बीच सन्तुलन स्थापित करने की बात करता है। इसके लिए आवश्यक है कि शासन *केन्द्रित* न होकर *विकेन्द्रित* हो, जिससे स्थानीय आवश्यकताओं का स्थानीय समाधान सम्भव हो सके। उपाध्याय जी ने *ग्राम स्वराज* और *स्थानीय स्वशासन* को शासन की आत्मा माना (NextIAS, 2025)।

सहभागी शासन भी इसी विकेन्द्रीकरण को आवश्यक मानता है। इसमें निर्णय प्रक्रिया केवल शीर्ष स्तर पर नहीं होती, बल्कि *स्थानीय निकायों, पंचायती राज संस्थाओं* और *नगर पालिकाओं* के माध्यम से होती है। यह दृष्टिकोण शासन को *लचीला, उत्तरदायी* और *जनसहभागी* बनाता है।

विकेन्द्रीकरण से शासन में *सामाजिक उत्तरदायित्व* और *नैतिक चेतना* का समावेश होता है। उपाध्याय जी ने कहा था कि शासन को *नीचे से ऊपर* की प्रक्रिया अपनानी चाहिए, जिससे *जन आकांक्षाओं* का सम्मान हो सके (Upadhyaya, 1965)। यह विचार आज *पंचायती राज, स्वराज अभियान* और *डिजिटल ग्राम* जैसी पहलों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

3·3 सांस्कृतिक पुनरुत्थान

एकात्म मानववाद का तीसरा प्रमुख आयाम है सांस्कृतिक चेतना। उपाध्याय जी ने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। उन्होंने शासन को *भारतीयता, धर्म* और *संस्कृति* के आधार पर संचालित करने की बात कही (Sau, 2024)।

सहभागी शासन इस सांस्कृतिक चेतना को व्यवहार में लाता है। इसमें शासन की नीतियाँ *स्थानीय परम्पराओं, भाषाओं, कला* और *संवेदनाओं* का सम्मान करती हैं। यह दृष्टिकोण शासन को *सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी* बनाता है, जिससे समाज में *समरसता* और *सांस्कृतिक पुनरुत्थान* सम्भव हो सके।

उपाध्याय जी ने कहा था कि शासन को *धर्म* के मार्गदर्शन में कार्य करना चाहिए। यहाँ धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं, बल्कि *कर्तव्य, नैतिकता* और *सामाजिक उत्तरदायित्व* से है (Das, 2025)। यह विचार आज *एक भारत श्रेष्ठ भारत, राष्ट्रीय शिक्षा नीति*, और *स्थानीय कला संरक्षण* जैसी पहलों में परिलक्षित होता है।

4. समकालीन सन्दर्भ

4·1 शासन में उपाध्याय जी के विचारों की झलक

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन—विशेषकर *एकात्म मानववाद* और *अंत्योदय*—आज के शासनतन्त्र में विशेष रूप से प्रासंगिक हो गया है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शासन के प्रारम्भ से ही उपाध्याय जी के विचारों को आत्मसात करने का प्रयास किया है। *सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास* जैसे नारे केवल राजनीतिक घोषणाएँ नहीं, बल्कि एकात्म मानववाद की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हैं (Meena & Dhayal, 2025)। इन नारों में समावेशिता, सामाजिक समरसता और अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच की भावना निहित है।

राजसभा सांसद डॉ0 दिनेश शर्मा ने स्पष्ट रूप से कहा कि ''मोदी सरकार की नीतियाँ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन से प्रेरित हैं और आम नागरिक की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में कार्य कर रही हैं'' (Bharat Express, 2025)। यह कथन दर्शाता है कि शासन की प्राथमिकता *जनसेवा* है, न कि केवल सत्ता संचालन।

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में भी उपाध्याय जी के दर्शन की झलक मिलती है। इस योजना में *नीचे से ऊपर* विकास की प्रक्रिया को प्राथमिकता दी गई है, जिससे *स्थानीय आवश्यकताओं* और *सांस्कृतिक विविधता* का सम्मान किया जा सके (News18, 2025)। यह दृष्टिकोण शासन को केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं रखता, बल्कि *नैतिकता, धार्मिक सहिष्णुता* और *सांस्कृतिक चेतना* को भी शासन का अभिन्न अंग बनाता है।

इसके अतिरिक्त, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एक भारत श्रेष्ठ भारत*, और *वोकल फॉर लोकल* जैसे अभियान भी उपाध्याय जी के *स्वदेशी* और *सांस्कृतिक राष्ट्रवाद* के विचारों से प्रेरित हैं। इन पहलों में भारतीयता को शासन के केन्द्र में रखा गया है, जिससे *सांस्कृतिक पुनरुत्थान* और *सामाजिक समरसता* को बल मिला है (Sau, 2024)।

4·2 योजनाओं में सहभागिता

मोदी सरकार की कई योजनाएँ उपाध्याय जी के विचारों को व्यवहार में लाने का प्रयास करती हैं। इनमें *प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, जन धन योजना, आयुष्मान भारत, प्रधानमन्त्री आवास योजना, स्टार्टअप इण्डिया*, और *डिजिटल इण्डिया* जैसी योजनाएँ सम्मिलित हैं। इन योजनाओं में जनभागीदारी, स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति, और *अन्तिम व्यक्ति* तक पहुँच की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (Andelwar, 2022)।

उदाहरणस्वरूप, *उज्ज्वला योजना* ने ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ ईंधन प्रदान कर न केवल स्वास्थ्य सुधार किया, बल्कि *सामाजिक गरिमा* भी सुनिश्चित की। यह योजना *अंत्योदय* की भावना को साकार करती है, जिसमें समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन ने नागरिकों को सफाई अभियान में भागीदार बनाकर *सहभागी शासन* की भावना को सशक्त किया। इस अभियान में *जनसहभागिता, सामाजिक चेतना,* और *नैतिक उत्तरदायित्व* का समावेश हुआ, जो उपाध्याय जी के शासन दर्शन के अनुरूप है। *प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना* ने दूरस्थ क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़कर *विकेन्द्रीकरण* और *स्थानीय विकास* को गति दी। यह योजना *स्थानीय स्वशासन* और *सांस्कृतिक समावेशिता* को बढ़ावा देती है। *जन धन योजना* ने वित्तीय समावेशिता को साकार किया, जिससे समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा गया। यह पहल *अंत्योदय* और *सहभागी शासन* दोनों की भावना को सशक्त करती है। *आयुष्मान भारत योजना* ने स्वास्थ्य सेवाओं को अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास किया है। यह योजना नैतिक उत्तरदायित्व और *जनसेवा* के सिद्धान्तों पर आधारित है।

इसके अतिरिक्त, *पंचायती राज* और *डिजिटल इण्डिया* जैसे कार्यक्रमों ने शासन को *नीचे से ऊपर* की प्रक्रिया में बदलने का प्रयास किया है। *पंचायती राज संस्थाएँ* स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती हैं, जिससे *विकेन्द्रीकरण* और *जनसहभागिता* को बल मिला है। *डिजिटल इण्डिया* ने शासन को *पारदर्शी, उत्तरदायी* और सुलभ *बनाया* है, जिससे नागरिकों को शासन से सीधे जुड़ने का अवसर मिला है (NextIAS, 2025)।

इन सभी योजनाओं और पहलों में उपाध्याय जी के *स्थानीय स्वशासन, जनसहभागिता, नैतिकता,* और *सांस्कृतिक चेतना* के विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है। यह दर्शाता है कि *एकात्म मानववाद* और *सहभागी शासन* की अवधारणाएँ आज के शासनतन्त्र में न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि *नीति निर्माण* और *जनकल्याण* के केन्द्र में भी हैं।

5. निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का *एकात्म मानववाद* केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक व्यापक जीवन दृष्टि है, जो भारतीय संस्कृति, परम्परा और नैतिकता पर आधारित है। यह दर्शन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास करता है, जिसमें मानव को केवल भौतिक इकाई नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप माना गया है (Upadhyaya, 1965)। इस समग्र दृष्टिकोण में शासन का उद्देश्य केवल प्रशासन नहीं, बल्कि जनकल्याण और सामाजिक समरसता है।

एकात्म मानववाद का व्यावहारिक रूप *सहभागी शासन* में परिलक्षित होता है। यह शासन प्रणाली नागरिकों को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि नीति निर्माण और क्रियान्वयन में सक्रिय भागीदार मानती है। उपाध्याय जी ने शासन को सेवा का माध्यम बताया और कहा कि जब तक

समाज के अन्तिम व्यक्ति तक विकास की पहुँच नहीं होती, तब तक कोई भी शासन प्रणाली सफल नहीं मानी जा सकती (Meena & Dhayal, 2025)। यही विचार *अंत्योदय* की भावना को जन्म देता है, जो आज की शासन व्यवस्था में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

समकालीन भारत में उपाध्याय जी के विचारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। *प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रस्तुत सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास* जैसे नारे एकात्म मानववाद की भावना को साकार करते हैं। योजनाएँ जैसे *प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, जन धन योजना* और *आयुष्मान भारत* इस दर्शन को व्यवहार में लाने का प्रयास करती हैं, जिनमें जनभागीदारी, विकेन्द्रीकरण और अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच की भावना स्पष्ट है (Andelwar, 2022; News18, 2025)।

इसके अतिरिक्त, *पंचायती राज* और *डिजिटल इण्डिया* जैसे कार्यक्रमों ने शासन को अधिक *उत्तरदायी, पारदर्शी* और *सहभागी* बनाया है। ये पहलें उपाध्याय जी के *स्थानीय स्वशासन* और *सांस्कृतिक चेतना* के विचारों से गहराई से जुड़ी हैं। शासन में नैतिकता और संस्कृति का समावेश आज की लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अधिक समावेशी और जनोन्मुखी बनाता है।

इस प्रकार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन आज के शासनतन्त्र के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धान्त बन चुका है। यह न केवल शासन को भारतीयता से जोड़ता है, बल्कि उसे नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी भी बनाता है। *एकात्म मानववाद* और *सहभागी शासन* की अवधारणाएँ आज के लोकतन्त्र को अधिक सशक्त, समावेशी और संवेदनशील बनाने की दिशा में अत्यन्त आवश्यक हैं।

सन्दर्भ-सूची

Andelwar, S., ''Pandit Deendayal Upadhyay and Social Welfare Schemes in Modern India'', **Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies**, 10(73), 2022, 1-10. https://www.srjis.com/assets/Allpdf/38 DrSavita%20Andelwar.pdf

Bharat Express, ''Modi Government's Policies Rooted In Deendayal Upadhyaya's Philosophy'': Dr Dinesh Sharma. (2025, September 25). https://english.bharatexpress.com/india/modi-governments-policies-rooted-in-deendayal-upadhyayas-philosophy-dr-dinesh-sharma-231999

https://www.jtgdc.ac.in/journals/uploads/INTEGRAL-HUMANISM.pdf

Das, K., ''Integral Humanism - An Introduction to Pt. Deendayal Upadhyaya's Philosophy'', **Journal of Multidisciplinary Studies**, 1(1), 2025, 59-64. https://www.jtgdc.ac.in/journals/uploads/INTEGRAL-HUMANISM.pdf

InsightsIAS, Integral Humanism: Deendayal Upadhyaya's Vision. (2025, June 2). https://www.insightsonindia.com/2025/06/02/philosophy-of-integral-humanism/

Meena, H. K., & Dhayal, S., ''Understanding nationhood and governance in the ideology of Deendayal Upadhyay'', **Journal of Emerging Technologies and Innovative Research**, 12(4), 2025, 1793-1799. https://www.jetir.org/papers/JETIR2504B97.pdf

News18, How PM Modi Leveraged Technology To Realise Pt Deen Dayal Upadhyaya's Vision Of Antyodaya. (2025, September 25). https://www.news18.com/opinion/opinion-how-pm-modi-leveraged-technology-to-realise-pt-deen-dayal-upadhyayas-vision-of-antyodaya-ws-kl-9595996.html

NextIAS, Pandit Deendayal Upadhyaya's Philosophy of 'Integral Humanism'. (2025, June 2). https://www.nextias.com/ca/current- affairs/02-06-2025/integral-humanism-upadhyaya

Sau, S., ''The Integral Humanism: Pandit Deendayal Upadhyaya'', **International Journal of Contemporary Research in Management**, 3(1), 232-236, 2024, . https://multiarticlesjournal.com/uploads/articles/IJCRM-2024-3-1-63.pdf

Sharma, B., एकात्म मानववाद के विचारों को किया शासन में आत्मसात [The ideas of Integral Humanism were assimilated into governance]. Patrika. (2025). https://www.patrika.com/opinion/the-ideas-of-integral-humanism-were-assimilated-into-governance-19974588

Singh, R., ''Political philosophy of Deendayal Upadhyaya in the context of Indian tradition and modernity'', **International Journal of Indian Management**, 10(V), 2025, 51-60. https://www.ijim.in/files/2025/September/Vol%2010%20Issue%20V51-60%20Paper%208%20Dr.%20Rajinder.pdf?_t=1762247406

Upadhyaya, D. (1965). एकात्म मानववाद [Integral Humanism]. भारतीय जनसंघ अधिवेशन भाषण [Bharatiya Jan Sangh Convention Speech]. ★

https://doi.org/10.62047/JNDH.2025.10.31.92